सं. ग्रो.वि./सोनीपत/149-83/61702.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. प्रशासक नगर पालिका खरखौदा (सोनीपत), के श्रमिक श्री सुभाष तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद/लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, मब, मोद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं 9641-1 -श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी मिधिसूचना सं 3864-ए.एस.मो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त मिधिनयम की धारा 7 के मिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादमस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुभाष की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० धो.वि./सोनीपत/149-83/61709.—पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज प्रशासक नगरपालिका, खरखीदा (सोनीपत) के श्रमिक श्री धान्धू तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद/लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिफ विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिनतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573 दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.मो.(ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते है, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो दिवादग्रस्त मामला है या उक्त दिवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री धान्धू की सेवाझों का समापन न्यामोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डीं/54-83/61716.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हरियाणा रोडवेज, फरीदाबाद श्री ग्रोम प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद/लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्यागिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री कोम प्रकाश की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो बि (सोनीपत/192-83/61723 — वूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज नगरपालिका, गोहाना के श्रीमक श्री सोमी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद/लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

म्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6--11-1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 38 64-ए.एस.म्रो. (ई) श्रम/70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या खंबंधित मामला है:—

क्या श्री सोमी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. थ्रो.वि./रोहतक/188-83/61751. च्यूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज दी मैनेजिंग डायरैक्टर, दी हरियाणा स्टेट फडरेशन ग्राफ कन्ज्यूमजं को० ग्रो० होलसेल स्टोरेज लि०, सैक्टर-22 बी, चन्डीगढ़ (2) जनरल मैनेजर ऐरिया श्राफिस, कान्फेड, रोहतक, के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6-11-70 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो.-(ई)-श्रम-70/13648, दिनौंक 8-5-1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालाय रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है:--

क्या श्री राजेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो.वि./जी.जी.एन./102-83/61759. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० दी ऐरिया मैंनेजर दी हरियाणा स्टेट फैडरेशन श्राफ कन्ज्यूमर्स को-भो० होलक्षेल स्टोर लि० डिस्ट्रिक्ट श्राफित 84, सिवित लाईन्ज गुड़गावां 2. दी मनेजिंग डायरेक्टर दी हरियाणा स्टेट फैडरेशन श्राफ कन्ज्यूमर्स को०ग्रो० होलक्षेत्र स्टोर लि० 114-15 सैक्टर 22-बी, चण्डीगढ़, के श्रामिक श्रीप्रेम पाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामत्रे में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीचोगिक विवाद श्रिष्ठिनयम, 1947 की घारा 10 की उपक्षारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई शक्तिकों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिष्ठसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, विनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिष्ठसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, विनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिष्ठित्यम की द्वारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीवाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनग्रंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है मा विवाद से सुनंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री प्रेम पाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./रोहतक/213-83/61767.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ऐथिक लैबोटरीज, सिविल रोड, रोहतक, के श्रमिक श्री म्रार० एन० सैनी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई म्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल वित्राद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांच 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त अधिनयम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो प्रिवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत या संबंधित मामला है:---

क्या श्री ग्रार० एन० सैनी की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहतं का हकदार है ?

सं० ग्रो. वि./करनाल/28-83/61774. — वूंकि राज्युपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज दी पानीपत कोपरेटिव शूगर मिल्ज, डिस्ट्लरी यूनिट, पानीपत के श्रमिक श्री सुमेर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम को धारा 7क के ग्रिधीन श्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सुमेर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किन राहत का हकदार है ?

चण्डीगढ़, दिनांक, 24 नवम्बर, 1983

सं. थ्रो.वि./करनाल/16-83/61912--चूंकि राज्यशल, हरियाणा की राय है कि 1. जायंकारी ग्रिभियन्ता सिविल वर्कस डिविजन एच एस.ई.बी,, नजदीक हरियाणा राज्य परिवहत कर्मगाला (ग्रन्याना शहर) 2. सहायक ग्रिभियन्ता सिविल वर्कस सब डिविजन (ग्रार. एण्ड ई.) हरियाणा राज्य त्रिजली बोर्ड करनाल, के श्रीमिक श्री जय कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, भ्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा(1) के खण्ड(घ) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन श्रौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित. मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:---

क्या श्री जय कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि./करनाल/16-83/61919.—-चूकि राज्यनाल, हरियाणा की राय है कि 1. कार्य कारी अभियन्ता सिविल वर्कस डिविजन, एच एस ईवो., नजरोज हरियाणा राज्य परिवहत कर्षश्चला (प्रम्वालाशहर) 2. सहायक अभियन्ता सिविल वर्कस स्वव डिविजन (ग्रार. एण्ड ई.) हरियाणा राज्य विजली वोर्ड करनाल, के श्रमिक श्री राज कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विचाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मनितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7क के ग्रधीन ग्रौद्योगिक ग्रधिकरण, हरियाणा, करीदाबाद, को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राज कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?